© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

पूषन् देव के लोकमांगलिक कार्य

डॉ वीरेन्द्र कुमार मौर्य
असि0 प्रोफेसर– संस्कृत
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय आलापुर,
अम्बेडकरनगर।

ऋग्वैदिकसमाज मुख्यतः कबीलाई समाज था और आर्यों का मुख्य व्यवसाय पशुचारण था। पशुचारण में कभी कभी पशु अपने मार्गों से भटक जाया करते थे अतः इन पशुओं की खोज के लिए आर्यों ने जिस प्राकृतिक शक्ति की स्तुति कीं, वे पूषन् देव के रूप में विख्यात हुए। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद में पूषन् देव सूर्य की कल्याणकारी एवं मानवों को पुष्टि प्रदान करने वाली शक्ति के रूप में वर्णित हैं। सूर्य देव की भाँति वे समस्त जगत् का भली–भाँति अवलोकन करते हैं और सवितृ देव की प्रेरणा ही विचरण करते हैं।

पुष् धातु से निष्पन्न पूषन् का अर्थ है– पोषक, पुष्ट करने वाला या समृद्धिदायक। ऋग्वेद संहिता के आठ सूक्तों में पूषन् की प्रख्याति है। युगल देव के रूप में एक सूक्त[1] में इन्द्र के साथ और दूसरे सूक्त[2] में सोम के साथ के प्रशस्ति है। इस प्रकार संख्या की दृष्टि से इनका स्थान विष्णु से ऊपर है। ये अतुल सम्पत्ति, सम्पत्ति के प्रवाह एवं धन के अगार के अधिपति हैं। जो ये समृद्धि प्रदान करते हैं वह पृथिवी पर मनुष्यों एवं पशुओं को प्रदत्त सुरक्षा और मनुष्यों को परलोक स्थित आनन्दमय आवासों तक इनके पथ प्रदर्शन का ही परिणाम है। अतः पूषन् के चरित्र सम्बन्धी धरणा की पृष्ठिभूमि में सूर्य की उपकारी शक्ति ही है जो प्रमख रूप से एक ग्रामीण देवता के रूप में अभिव्यक्त हुई है।

ऋग्वेदसंहिता में पूषन् देव की मनुष्य–आकृति का कोई विशेष परिचय नहीं मिलता किन्तु जब दुष्टों के समूह को पदाक्रान्त करने की इनसे स्तुति की गयी है, तब इनके दाहिने हाथ एवं पैरों का उल्लेख है।[3] इनके वेणीयुक्त सुन्दर केश है[4] और दाढ़ी भी है[5] इनके हाथ में एक अंकुश एवं सुवर्ण की माला रहती है। पूषन् के रथ को अश्व के स्थान पर बकरे खींचते हैं।[6] इन्हें सर्वश्रेष्ठ रथी कहा गया है। उष्णिका इनका प्रिय भोज्य पदार्थ है[7]। सम्भवतः इसी कारण शतपथ ब्रह्मण (1/7/4/7) में इन्हें दन्तविहीन कहा गया है। कौषीतकि ब्राह्मण के अनुसार पूषन् देव के दन्तहीन होने के कारण करम्भ (पुआ) इन्हें प्रिय है।

पूषन् देव जगत् के समस्त प्राणियों को समान रूप से देखते हैं। सूर्य देव की ही भाँति इन्हें भी समस्त स्थावर जंगम का अधिपति कहा गया है। द्युलाक से पृथिवी लोक तक के समस्त प्राणियों के उत्तम बन्धुरूप ये अन्न एवं धन के स्वामी हैं। ऐश्वर्ययुक्त ये पूषन् देव समस्त विश्व को प्रकाशित करते हुए गमन करते हैं–

'पूषा सुबन्धुर्दिव आ पृथिव्या इळस्पतिर्मघवा दस्मवर्चाः।
यं देवासो अददुः सूर्यायै कामेन कृतं तवसं स्वञ्चम्।।'[8]

पूषन् देव अपनी माता के स्वामी हैं। ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है कि देवों ने पूषन् को सूर्य की पुत्री सूर्या को विवाह में दिया था। सम्भवतः सूर्या के पति के रूप में पूषन् विवाह सूक्त (ऋग्वेदसंहिता 10/85) में विवाह संस्कार से सम्बद्ध किये गये हैं और इनकी स्तुति इसलिए की गयी है कि ये वधू का हाथ पकड़कर अलग ले जाँय और उसे सफल वैवाहिक जीवन के लिए आशीर्वचन प्रदान करें। ये मुख्य रूप से सूर्य के दूत के रूप में कार्य करते हैं। ये एक ऐसे रक्षक हैं जो समस्त प्राणियों को भली–भाँति जानते एवं पहचानते हैं–

'शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विरूपे अहनी द्यौरिवासि।

विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु।।'[9]

पूषन् देव का जन्म द्युलोक एवं पृथिवी लोक के दूरस्थ पथ पर हुआ है। ये दानों ही प्रिय आवासों को जानते हुए उसमें जाते हैं। मार्गों से भली–भाँति परिचित होने के कारण ये दूरस्थ मार्ग पर स्थित पितरों के आवास तक मृतकों को उसी प्रकार पहुँचा देते हैं जिस प्रकार अग्नि और सवितृ देव भी इन मृतकों को उस लोक तक ले जाते हैं, जहाँ पर पुण्यात्मा लोग जाकर देवों के साथ रहते हैं। साथ ही पूषन देव अपने उपासकों को भी उसी लोक तक पथ प्रदर्शन करते हुए पहुँचा देते हैं। सम्भवतः पूषन् के ऊँचे पथों से परिचित होने के कारण ही कदाचित् इस धारणा का विकास हुआ है कि इनके रथ को कभी न फिसलने वाले बकरे खींचते हैं। ये बकरे भी कुशल पथप्रदर्शक हैं।

मार्गों के ज्ञाता होने के कारण पूषन् की पथप्रदर्शक एवं पथरक्षक के रूप में कल्पना की गयी है। संकटों, भेड़ियों, मार्ग तस्करों आदि को मार्ग से भगा देने के लिए इनकी स्तुति की गयी है। इसीलिए इन्हें 'विमुचो नपात्' कहा गया है[10]। शत्रुओं को भगाने और मार्ग को सरल बनाने, शत्रुओं कों नष्ट करने और श्रेष्ठ चरागाहों तक पहुँचाने के लिए पूषन् देव की स्तुति की गयी है[11]। अपने को हानि से बचाने और कल्याणप्रद मार्ग प्रदर्शित करने हेतु इनका स्तवन किया जाता है। यात्रा के समय इनका स्तवन किया जाता है और जब कोई अपना मार्ग भूल जाता है तब पूषन् देव का ही आवाहन किया जाता है।[12] इसके अतिरिक्त प्रातः तथा सायं सभी देवों तथा प्राणियों को समर्पित उपहारों में से अपना भाग लेने के लिए पूषन् देव घर कें दरवाजे तक स्वयं आते हैं।[13]

मार्गों के ज्ञाता होने के कारण पूषन देव गुप्त देवों को सरलतापूर्वक खोज लेने योग्य बना देते हैं। इसलिए आश्वलायन गृह्यसूत्र (3/7/9) खोई हुई वस्तु को प्राप्त करने के लिए पूषन् देव के लिए यज्ञ का विधान करता है। पूषन् देव पशुओं की भली–भाँति देखभाल करते हैं, पशुओं को गढ्ढों में गिर कर चोट खाने से बचाते हैं और उन्हें सुरक्षित आश्रयस्थान पर पहुँचा देते हैं–

'माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकी सं शारि केवटे। अथारिष्टाभिरा गहि।।'[14]

'परि पूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम्। पुनर्नो नष्टमाजतु।।'[15]

वैदिक साहित्य में एकमात्र पूषन् ही ऐसे देव हैं जिनके लिए स्वतन्त्र रूप से 'पशुपा' अर्थात् मवेशियों का रक्षक कहा गया है।[16] ये भक्ति के लिए प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं और भक्ति की अभिवृद्धि हेतु इनकी स्तुति की जाती है।[17] इनका अंकुश पशुओं का उचित मार्गदर्शन करता है। पूषन देव भेड़ के ऊन के वस्त्र बुनते तथा उन्हें चिकना करते हैं।[18] अतः पशुओं को पूषन् के लिए पवित्र माना गया है। शांखायन गृह्यसूत्र (3/9) में इस बात का उल्लेख मिलता है कि पूषन् देव सम्बन्धी मंत्रों का विधान उस समय किया जाता है जब गायों को चरागाहों में चरने के लिए छोड़ दिया जाता है। तैत्तिरीय

ब्राह्मण (1/7/2/4) में इन्हें पशुओं का जनक कहा गया है। पूषन् देव के लिए 'असुर' विशेषण का भी प्रयोग किया गया है। ये योद्धाओं के शासक, अविजेय रक्षक तथा सहायक और युद्ध में सहायता करने वाले देव हैं–

'परो हि मर्त्यैरसि समो देवैरुत श्रिया।

अभि ख्यः पूषन् पृतनाशु नमस्त्मवा नूनं यथा पुरा।।'[19]

अवेस्ता में वर्णित सौर देवता 'मिथ्र' से पूषन् देव की समानता की जा सकती है जिसमें मिथ्र देवता को पशुओं की वृद्धि और भटके हुए पशुओं को पुनः लौटाने की प्रार्थना की गयी है। निरुक्तकार आचार्य यास्क ने पूषन्देव की तुलना आदित्य से की है अर्थात् आदित्य की भाँति ये भी पशुओं के लिए प्रकाश फैलाने वाले हैं। इसीलिए एकमात्र इन्हीं के लिए 'प्रदीप्त' की उपाधि के लिए विभूषित किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1–ऋग्वेदसंहिता– 6/57

2–ऋग्वेदसंहिता– 2/40

3–ऋग्वेदसंहिता– 6/54/10

4–ऋग्वेदसंहिता– 6/55/2

5–ऋग्वेदसंहिता– 10/26/7

6–ऋग्वेदसंहिता– 1/38/4, 6/55/3–4

7–ऋग्वेदसंहिता– 6/56/1

8–ऋग्वेदसंहिता– 6/58/4

9–ऋग्वेदसंहिता – 6/58/1

10–अथर्ववेदसंहिता– 6/112/3

11–ऋग्वेदसंहिता– 1/42/7, 8

12–आश्वलायन गृह्यसूत्र– 3/7/89, शांखायन श्रौतसूत्र– 3/4/9

13–शांखायन गृह्यसूत्र– 2/14/9

14–ऋग्वेदसंहिता– 6/54/7

15–ऋग्वेदसंहिता– 6/54/10

16–ऋग्वेदसंहिता– 6/58/2

17–ऋग्वेदसंहिता– 2/40/6

18–ऋग्वेदसंहिता– 10/26/6

19–ऋग्वेदसंहिता–6/48/19